इक्ष्वाकु से

(एक लम्बी कविता)

मूल्य तीस रुपये
सर्वाधिकार लेखक
सस्करण 1988
प्रकाशक दिशा प्रकाशन, 138/16 त्रिनगर दिल्ली 35
आवरण हरिप्रकाश त्यागी
मुद्रक कमल प्रिंटस 9/5866 गाधीनगर दिल्ली-31

IKSHVAKU SE (A long poem)
by Maharaj Krishan Kav Price Rs 30 00

राज के लिए

इक्ष्वाकु से

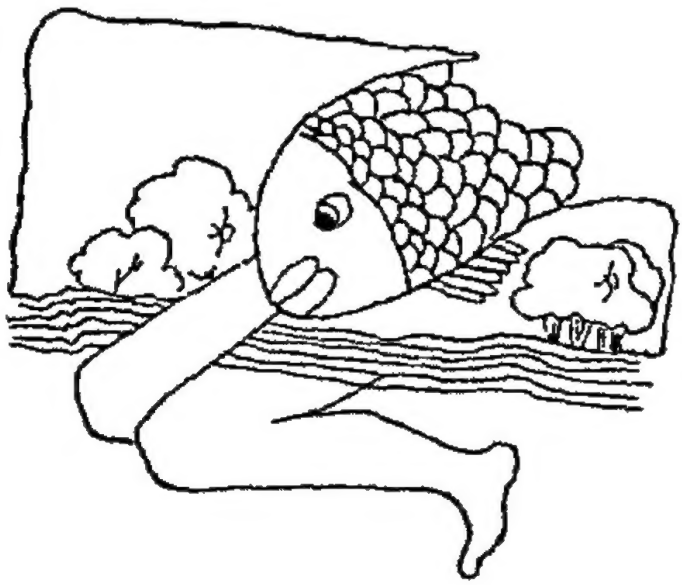

तुम्हे जब मैं 'तुम' कहूगा
तो मत होना नाराज
'तुम' के सहारे
बोल रहा हूँ
मैं अपने ही से

क्या कविता नही है स्वय से एक बातचीत ?
होती रहती जो दिन रात
कुड कुड कुड
भीतर ही भीतर
उसी का मूत्त आकार
मरे मन का मूक विलाप

पढी है कभी खुशी की कविता
उस समय तो खुशी से
नही होती फुसत
वह व्यक्ति जीता है
घूट घूट जिदगी
पीता है

तो समझ लो, दोस्त
इस वक्त मैं जी नही रहा
कर रहा जिए हुए की जुगाली

अह की छाती के घावा पर
लगा रहा सभ्य गालिया का मरहम,
जिस व्यवस्था को बदल नही पाता
उसी पर कर रहा कागजी मार
रहस्यमय जीवन के गुह्यतम अर्थ
न समझ पाने की लाचारी को
छिपा रहा हूँ शब्दो मे

लगगा कई बार
कर रहा हूँ कुछ नया
गौर से सुनो
कही थी मैंन
ऐसी ही बात
इक्ष्वाकु से ।

अतीत की काली सच्चाई पर
स्मति का रुपहला लिबास सजाकर
कहते हो तुम
अच्छा था औरगजेब का जमाना

भूल जाते हो
यादा की अँधेरी सुरग मे

सुन पडा रहना है सब

औरगज़ेब की रियाया मे भी
कोसते थे तुम वतमान को

हुए हो हर युग म
ही साक्षी
हर आहट हर करवट के
और हमेशा
एक रोदू बच्चे की तरह
बहती सिडकती नाक लिए
पढत रहे वतमान का मसिया

क्या अतीत था उसे पता
दखते रगीन ऐनक से
और जब
पसद नही आता
ता इच्छानुसार
बदल देते एनक

याद करो बचपन
गली कूचो की किलकारियाँ
गूजती नही कानो म ?

मदिर का विशाल प्रागण
आर कतार म खडे

स्वयसेवक की छाती पर
लकडी की पडाऊँ बजाता
निकरधारी सरसघचालक ?

किनारो से टँगे
डूबते-उभरते डूगे
तीर-सी सरसराती नाव

शिशुदेह पर उँडेलती
ठडे पानी की गडवी
सिहरन सिहरन महलाती
सारा मुहल्ला

कई बार चाहा है तुमने,
जिम्मेदारियो का बोझ
कधो से उचकाकर
फिर बच्चा बन जाना

नजर आती सिर्फ
उन्मुक्तता
चचल इद्रिया की

□

मगर तुम भुला बैठे हो
भुतहे अधेरे का भय
दबोचने की ताक म
रहता जो

मिट्टीपुती सीढियो पर

बडे, जो सदा तुमसे बडे ही रहे
कभी चूमते
कभी पीटते
पुचकारते, फुफकारते
मीठी नीद सुलाते
मीठी मीठी नीद से जगाते
लौह-बाहो मे भीचत
मारते इस्पाती-थप्पड
समझ चाबी लगा खिलौना
खेलते एकतरफा खेल

कितनी कितनी बार
भिचती तुम्हारी मुट्ठियाँ
काश ! मुझमे ताकत होती
मैं भी इन्ह मारता
मूछा को देकर ताव
खुरदरी शेव पर मुलायम साबुन लगा
कपिल देव सा कहता,
"पामालिव दा जवाब नही '

काश ! मैं लम्बा होता, सिटकनी खोलता
छिपाई मिठाई खोसता
निलज्ज पेट मे मेवा ठूसता
काश ! मैं बडा होता
क्या याद है तुम्हे ?
होता अगर याद
तो अपने बच्चो का तुम

खिलौना न बनाते

कुछ नही है याद
मन के अधकारमय कोना मे
सहेज रखा है झूठे सपना को
और भुला दिया है
वह खट्टा मीठा सच
दौडता था जो
बचपन की धमनियो म

सच कभी पुराना नही पडता
सच पडता है पुराना एक पल म

विवस्वान ने मुझसे
और मैंन इक्ष्वाकु से
कहा था जो सच
पुराना था वह
जितना विवस्वान
मगर आज का मेरा सच
नया है इस प्रात की
प्रथम किरण-सा

मर कहे को ने
बैठ मत जाना
कहा था जो मैंन
इक्ष्वाकु से कहा था

और तुम नही हो इक्ष्वाकु

पुरातनपथी पोथो मे
छप जवाबो को
पढते पूर्वाग्रह के लेस से
सच की खोज के लिए

उन मरी हुई किताबो की
अधमरी भाषा मे
फूक टीका की नकली सास
करत जिलाने का व्यथ प्रयास

तब मैं रो पडता ।
कसे कहू जिंदा सच
मुर्दा पुस्तको म नही मिलते
सरसराते है सच
हर रोज बदलती
ताज़ातरीन हवा के झोको म

आज के सच हैं
अभी फूटी हरी कापलें,
प्रिया-कपोल पर ठिठका गुनगुना आंसू
पानी की सतह पर
छटपटाती सुनहली मछली
इसी क्षण सीने को चीरती
गोली से फव्वारता
तपाक-तरार खून
बडे आदमी की बचकन मे टका
अभी-अभी शाख से कटा
गुलाब का फूल

मेरे दोस्त ! उभरी
शुतुरमुर्गियत से
अधविश्वासो की रेत से गदन निकालकर
करो देखने की जुरत
सच अपनी जिंदा बीभत्स खूबसूरती मे
खडा है हर पल
तुम्हारे रूबरू

लेकिन सच जीना है ईसा की सलीब
काटा का ताज
सिपाहियो की थूक
ईमानदार आदमी का
डाकुओ की कतार मे
होना शुमार

सच जीना है
जिंदगी के विरोधाभास को
प्रकाश का स्वीकार ही नहीं
अधा अधकार भी
अहिंसा परमो धम ही नही
सीटी बजाते गुण्डे की
बहन को नगाती नजर से
उपजी हिंसा भी

है कटु सत्य यह भी
रिश्वतखोर ही होता योग्य

म्यूजिकल चेयस के खेल मे
कुर्सी मिलती उसी को
जो धीमे धीमे चलता
कुर्सी से चिपकता
दूर होते ही दौडता
उसे छल से खासता
यह कटु सत्य
कि शिखर पर जगह है कम
कही तक ही साथ सजता मित्रो का

यह सच कि गिरे हुए शरीफ आदमी को
साथी नही बनाती
खूबसूरत लडकी भी

मगर शरीफ आदमी है कौन
उठा है पहले भी यह सवाल
दुर्योधन या धर्मपुत्र
रावण या राम
चर्चिल या हिटलर
अमेरिका या वियतनाम ?

काले धन की तिजोरी से लिपटा
स्मगलर-सर्प
या महावारी बटोरता
इनकमटैक्स इस्पेक्टर

आयातित कार के गद्दा म
धँसा स्वामी,
राजनतिक समस्या का
तान्त्रिक उपाय खोजता मन्त्री

बसो की होली खेलता
क्रातिपसद युवक,
निशाने पर
गोली दागता सिपाही

सुरसा परिवार को
पालता पटवारी
घूस की जमावदी
लेता किसान
कॉफीहाउस मे बहसता
केशधारी कवि
कलम का कातिल
समीक्षक

देश का रक्षक 'विक्रक' लेता
विमान का ठेका,
के० जी० बी० का पिट्ठू
विश्वशाति उपासक ?

दरअस्ल सच का नहीं है कोई धमकाटा
सच नहीं है एक ठोस चट्टान

कि जिसके निराकार अनघडपन मे से
विचार की छेनी से तराशा जाए बुत

सत्य प्रवाहमान पानी है
उथला गहरा निर्मल गदा
प्यास बुझाता, छप्पर फोडता
खेत सीचता आदमी डुबोता
जिसकी धारा को रोक
हम भरते अपने-अपने बतन
देख पाते केवल अपना ही अक्स

जो कहा था मैंने इक्ष्वाकु से
(उसके भाई कवि से नही कहा था)
था वह उस वक्त का ठहरा हुआ पानी
कह रहा हूँ जो आज
है उस वक्त का सहमा हुआ जल
शब्दो के बतन म ठिठका हुआ
पाना है गतिशील सत्य को
तो डूबना होगा बहती हुई धारा म

सच नही है कोई चीज
कि ढूढकर पा लें
रख लें
सहेजकर अपने तालेदार सदूक मे
शादी की कीमती रेशमी साडियो की तरह
जो कभी

पहनी नही जातीं
जिन्हे यदा-कदा निकाला जाता है महज देखने,
या यादा की सुरग से
कोई चमचमाता क्षण चुराने के लिए
और फिर डालकर फिनाइल की गोलियाँ
सुला दिया जाता है अगली सदियो तलक

मगर जब कोई व्यक्ति करता है एलान—
"दुनिया के लोगो !
कान खोलकर सुन लो
मैंने सच का सही रग खोज निकाला है
बस यही सच है और कुछ सच नही है
लाओ अपने-अपने तालेदार सदूक
भर लो मेरे रग की रेशमी साडियाँ"
तो टूट पडती भक्तो की भीड

देखो जरा गौर से
क्या रखा है रगो मे
क्या सब रग नही हैं कुदरत के
और जब कुदरत को नही परहेज
किसी भी रग से
या किसी से लगाव
तो हमें ही,क्या

मगर निश्चित की है हमारी पसद
रगो के राजनेताओ ने
एक ही रग की होती है
फौज की वर्दी
और एक ही रग मे सजते है
जलसे जुलूस
□

हाँ
तुम अगर हो जुलूस मे
तो रहो वही
मैं क्या दू निमन्त्रण
बाहर आने का
क्यो कहूँ
जहालत है
कतार म कवायद करना

बैस्टील की ऊँची क्रूर दीवारा को
तोडा था भीड ने
जलाए द्वार उडा दिए द्वारपाल
सडासी कोठरियो मे ठिठुरते नरककालो को
किया आज़ाद
मजलूम औरतो के लौटा दिए शौहर
छद्मवेशी राजारानी को लिया दबोच
दिव्य सरो को काटने मे
नही किया सकोच

थी भीड वह
भीड के पास ही होता है गला
भीड ही तोड सकती, फोड सकती
जला सकती उडा सकती, गिरा सकती है

तुम अगर जुलूस मे हो
तो रहो वही
लेकिन अगर मैं भीड मे नही हू
तो तुम्ह भी नहीं है हक़
मुझे बुलाने का

बैस्टील की भीड़ उमड़ी नहीं थी यकायक
जुल्म भीड़ पर हमला हुआ है
उस भीड़ के पीछे में कुछ लोग
जिन्होंने मुक्त किया
इंसान के दिमाग को
धर्म की अंधी बेड़ियों
सत्ता के जंजीरी भय
गरीबी के बर्फ़ाए-आलस से

हर भीड़ के पीछे होता है
एक अकेला व्यक्ति
अपने कमरे में एकाकी
सपने बुनता
कागज़ रंगता
नई दिशाओं की रेखाएँ खींचता बाँचता
उसके पास नहीं होता गला
उसे भीड़ में ठूँसो तो पिछड़ जाता है

मुझे माफ करो
मत करो शामिल जुलूस में
और तुम भी नारे लगाने से पहले
परख तो लो हो किस जुलूस में
बस्टील को तोड़ते सतरंगी जुलूस में
या फौजनुमा यकरंगी जुलूस में
खड़े करता है जो
रोज़ नए बस्टील

मत भूलो यह भी
हर जुलूस शुरू में सतरंगी ही होता है
एक दिन अगर

होना पडे तुम्ह अपने ही जुलूस के खिलाफ
तो पैदा करो अपने मे
ताने, पत्थर, गालियाँ
सहने की शक्ति भी

मेरे कहे का बुरा मत मानना
जो कहा था मैंने
मनु ने कहा था
श्रद्धा के प्रथम पुत्र को
तुम्हारे पिता तक हैं
और विवेचना है मा

इसीलिए कहता हूँ विस्तार से
समझा था जिसे
अधमुदी आख के एक इशार से
इक्ष्वाकु

नजर नजर का है फक
अतर है जाविए जाविए म

जिस किसी न कहा था शब्द को ब्रह्म
जाना नही था 'गोयबल्ज' उसन
सोची नही थी झूठ के दोहराने से
सत्य गढने की नूतन प्रक्रिया
आज शायद वह कहता शब्द को भ्रम

ठाकी जाती कील पैगम्बर के कान म,
नकली भगव मे रेशमी ऐश भोगता
जादुई लफ्जा का फरेबी तिलिस्म
कुर्सी को घेरती मुबारकबादा की भीड
जीहजूरी लील जाती एक साफगो इसाँ

गरीब के खेत मे उगती नारा की फसल
और नेता बेचारा सहता मुर्गा और महल

भाषणा म पिए जाते विश्वशाति के जाम
और सरहदा को पलश होते जग के पैगाम

फर्जी ऐश्वय से रोब गाँठता लखपति
काँइएपन से लता करोडा का कज
किसान की भैंस का एक हजार माँगता
दस्तखत दसिया, चक्कर चालीसा
खिलाती चतुर चाट चुराए चुटकुला की
हँसते हाठो से एक शातिर आख

प्यार का इज्हार है आम खाने की इच्छा
गुठलियाँ ढूढती थोथी सुरक्षा

यहाँ सात्वना नही है सात्वना
है हसद के मीठे जहर मे सना
झूठे शब्दो का बस नुकीला तीर

दोस्ती की खिलखिलाहट मे होते पोशीदा
बाता के बघनखा, प्याला के खजर
शहदघुली आवाज म तान, कटाक्ष

नही रहा शब्द का कोई भी अर्थ
अर्थ के दलदल मे फँसा है
शब्द

चाँदनी नहाया ताज बढ़ा देता है
सैलानी युगल के आलिंगन का कसाव
किसे है फुर्सत देख पाए
आला नक्शकारो के कटे हुए हाथ

नकली दवाई का व्यापारी देता है घूस
स्वर्ग के सोपान तोदल पुजारी को
इतिजारी भीड के थके आतुर पाँव
भाँप नही पाते नकलीपन पूजा का

कवि को दीखता है बाग का फूल
बिखेरता सुगध बिना किसी गर्ज
भूल जाता खुशबू के छलावे मे
पनपता फूल का निहित स्वार्थ

लोग सुनते हैं रग बिरगी मासूम
चिडिया की चहचहाहट का मधु सगीत
किसी विरले तक ही पहुँच पाती है
उसकी भरपेट नि शब्द डकार

शायर को नजर आता है परवाना
शमा की रोशनी मे झुलसता मँडराता

नजरअदाज करती पर उसकी नजर
छिपकली की लोलुप लपलपाती जीभ

कंक्रीटी इमारतों से बौनाए बुद्धिजीवी
चढ़ाते हैं हरे ग्रामीण परिवेश पर
थोथी रूमानियत का बेमानी मुलम्मा
नहीं बूझते उस अपार शांति में
गूंगाए मुहों की असंगत चुप्पी

कलाकार की कूची करती है कैद
पनघट की पनिहारिन की कमर का लोच
बनती नहीं भोक्ता उस बीहड़ चढ़ाई की—
पसीना करता पैदा
कमर का कटाव

ओ मार्क्स के बौने चेलो !
देखा है पेट का अजीब इंसाफ
सूखा सख्त बासी निगलता
नून-प्याज से पचाता गरीब का पेट
अमीर का उदर बनकर बागी
फिंकवा देता मेज सजे पकवान

देख नहीं पाए
फ्रायड अनुयायी
विचित्र अवचेतन का खिलवाड़
दबाओ वासना तो लावा की तरह

फट पडता आतिशफिशाँ पहाड
हवा दा वासना की पतली लपट का
तो भी होती राख
सवत्र

चरखा गाधी के अनन्य भक्तो ने
कभी स्वय अहिंसा का स्वाद,
अनशनी छात्र कर अनसुनी
कुलपति-कुर्सी को लेते छीन
मर कर पागल बनता शहीद
हमेशा हडताल पर रहता राष्ट्र

नही सोचा शवरपथिया ने
कहाँ ले गया मायावाद,
मिथ्या जगत म बने हम गुलाम
हुआ सन्यास पलायन पर्याय
छिपे गेरुए म गाजा चरस
पनपी देश मे
भिखारियो की भीड

नही छूटता कभी जिदगी का कज
अति की वेदी पर
सब होता बलिदान

मगर बात इतनी नही है सादा
जितना पट का दद

फूला हुआ सांस
घलासी गुर्दे की
या गुप्तांग विकार

समझता है तो महसूसो
कामयाबी की विफलता
बदनामी शोहरत की
अमीर की गरीबी
मौत की बेहतर जकड़न

कभी कामयाब आदमी की आंख में
देखा है झांककर
जरूर देखा होगा फिर
पुतली के अंदर
घूरता हुआ कुआं
अंधा काला खाली
अंधेरा जिसका ठंडक नहीं
पहुंचाता है ठंड,
वहां निस्वार्थ किरण चुपके से आ
नहीं चमकाती भावना की कोई भी लहर
वहां कुछ नहीं हिलता

कामयाब आदमी किसी के पहलू में बैठकर
इधर उधर की गप्प नहीं हांक सकता
पार्टी की मछलियां को
आंकती नजर
हेलो हेलो' करता गुजरता चला जाता
यहां मुस्काता वहां भिनभिनाता
गुर्राता, हिनहिनाता

होठों की गम मुस्कान से सद आँख छिपाता
बस सम्पर्क के दायरे मे सैकड़ो को सिमटाता
गुजरता चला जाता है वह

तुम्हारी आँख के बीच उगते जगल को
मैंने देखा है, मशहूर इन्सान !

मगर याद है मुझे वह दिन भी
जब वहाँ कुछ नही था
बस दूर तक फैला हुआ
एक निरीह हरापन
जिस पर नजर टिकती नही
फिसलती जाती थी
क्षितिज तक
और उसके पार भी

इन गुजिरता चद साला म
तुमन बहुत कुछ कमाया है
चालाकी की आदमकद घास
हजारो पलायना के झाड झखाड,
समझौता-परस्ती के
लालची खरपतवार,
और काँइएपन की काई
घोट रही जो
नीली झील का दम

उस जगल के सामन भी
चन चुकी है सगेमर्मर की सद दीवार
जिसकी नक्काशी म
उभरते हैं कुछ चित्र—

[illegible] के गजलिसी [illegible] म
पिगलते-[illegible] के पत्ते
तिजारती प्यार म [illegible] छाया स
घुप्प सरसराते [illegible]
[illegible] अधजग [illegible] पर
[illegible] नापत [illegible]

अब तो जगल का भी [illegible] आता है
सिर्फ एक अक्स

[illegible] की दीवार
नगी है
मटमैली, अधकचरी
ऊबड खाबड धरती-सी
टेढ़ी-मेढ़ी अजीब-सी
गरीब के नसीब-सी

लीपन मे फँसे
भूस के
इक्के-दुक्के
तिनके

धनी की दीवार
भी नगी है
टँगी है बस
एक मौलिक 'पिकासो'

निधन की नार
नगी है

मैली, रूखी
पिचकी सूखी
भूखी नगी
पर बेढगी

चेहरे म घटी
थकान की
हताश
धुरियाँ

धनी की नार
भी नगी है

और सबसे परे
ऊँचे आसन पर बैठ
आत्मा के डाक्टर
जिंदगी के कैंसर का
लिखते मोक्षमयी नुस्खा
अनबूझ श्लोको की अनजानी लिपि मे

और वैराग्य की फिनाइल से
लालसा की बदबू दबा
गगातटी आश्रम के वाड मे
मत्र मुग्ध जवान
और माला से जकडे हाथ लिए
मुक्तिमोही बीमारो को
लिटा देते मुक्तिदायिनी खाट पर

लिखा है भागवत मे

हुआ था मुक्त
इक्ष्वाकु भी
मृत्यु के बाद
मगर क्या यह जरूरी है
तुम्हारे साथ भी हो यही ?

मस्तिष्क की आँख पर
फैल चुका मोतियाबिंद

आँख के झरोखे से
देखते हैं लोग
मौत के
बीहड़ अंधकार का
फैलता
पसरता
अनंत विस्तार

सालों पुराना
बोसीदा दिमाग
टँगे हैं जहाँ
कसाई के बकरे
मुर्दा विचार

मौत है जीवन का अंत
मौत जिंदगी की दुश्मन है,
कहते व्याख्याता

विपरीतार्थक शब्द

मेरे दोस्त !
मौत के डर से
कितनी कितनी बार भागे हो
जिंदगी से तुम
कितनी कितनी बार गुजारा है जिंदगी को तुमने
मौत की तैयारी समझ,
कितनी बार
मौत की झल्लाहट से ऊब
तुमने जिंदगी को
दिया है खिताब
सपनों का

जिंदगी स्वर है
मौत सन्नाटा,
नहीं जानते व्याख्याता
जन्मा है स्वर
चुप्पी की कोख से

दूर किसी अनातवन में
उमड़ते बिखरते झरने के
अनवरत शोर-सा
सुना है
सन्नाटे का
अनहद नाद ?

जीवन दरिया है
हिमशिखर है मौत,

नही जानत व्याख्याता

बर्फ सिर्फ है नाम
मुन्जमिद पानी का
एक ठहरा हुआ पानी है
एक बहता हुआ पानी है

जिंदगी पर्दे का उठना है
पटाक्षेप है मौत
नही जानत व्याख्याता
मेक-अप का
कमाल

इधर मरता रामलीला
का रावण
उधर लगा
दाढ़ी जटा
जी उठना वशिष्ठ

जिन्दगी बसंत है
मौत है शीत
नही जानत व्याख्याता
बीज का इतिहास

माना जो सर्दियों म
बहार म ल अँगड़ाई
फूटता कोपल-कोपल

तुम्हें लगता है

तुम नही थ कभी
या नही रहोग
कभी उम्र के
तेज दौडत
मीलपत्थरो को देख
बूढे होने का
हुआ है एहसास ?

अस्सी वर्षीय दूल्हे के साथ
षोडशी दुल्हन देख
लोग हँसते हैं
बूढा नही

देखा नही दादाजी को
फर्श पर घोडा बन
उछलते हिनहिनाते
और नवजात शिशु का
मासूम गाम्भीय

वह अभिनता ही क्या
जो पर्दा गिरन के
क्षण को
बनाए सोच का
मरकज
और हर पल बदलते
किरदार को
रख दे ताक पर

जानना चाहते हो
जिंदगी का रहस्य

क्या मौत नहीं है
दियासलाई की नोक पर
जमी हुई आग ?

मौत अगर
है पुलिया
तो अमरत्व क्या
कभी समाप्त न होने वाला
अनादि
अनत
पुल
क्या सारी तलाश
उसी बिना गतव्य के
पुल की है
मृत्योर्मा अमत गमय ?

कुर्सी पर बठ
वक्ते वक्ता की
अधघटी बौछर पर
क्यो हिलाते टाँग
मशीनी पुर्जे-सी

अकेल सफर की

बोरियत खाई मे
क्या नही डालते
पुस्तक, पत्रिका के
उडते हिलते शब्द
रेडियो, टेप के
काँपते लरजते सुर
फ़िल्म, राजनीति की
निरथक गप्प
भागती सडक के
अनदेखे दृश्य

नीरव मन मे
तडप उठती
अनगल विचार की
कर्कश भौंक

उड उड जाता
चेतना-वेताल
जा लटकता
वासना-वृक्ष पर

नही चाहते हम
रुके वहीं
मिठाई के जिह्वा से
छूने का पल

घटे नही
तीसरे पग की
पहली चुस्की का

हल्का सरूर

प्रथम प्रेयसी का
चिकनी पखुडी-सा
होठों का स्पर्श
शहद-साम का पान
रुके नही

सभोग के बाद का
सिगरेट का कश
हो असमाप्य

मगर अनत कार्यों से
कहाँ पहुँचा मनुष्य

देखी अमर खाऊ की
मुटल्ली रक्तचाप

अमर पियक्कड की
नाली शैया ?

घुआती चिमनी का
फैफडा कैमर

अनत प्रेमी का
भावशून्य मन

पाना है अमरत्व
का पूर्वाभास

क्या नही पर्याप्त
राशन, सिनेमा
मंच, औषधालय
बैंक, दुकान
की असह्य कतारा मे
खडे रहने का
टाँगतोड
पसीनापोछ
अनुभव

दखा है कभी
अमरत्व इच्छा
का बीभत्स अजाम
पुरातत्ववेत्ता की
अगुलिया मे
बिखरता
मिस्र की ममी का
लाफानी जिस्म

उपजी कहाँ से
कल्पना अमरत्व की
चरस के नशे का
कालजयी एहसास
क्या नही जिम्मेदार

जानते हम
जितनी गहरी प्यास
उतना पीने का मजा
पीने और प्यास के

क्षणिक बदलाव
क्या नहीं उभारते
नाटकीयता

और क्या इसी में नहीं है
सार्थकता
हर जन्मते मरते पल की ?

दिखाया है तुम्हें
कई किताबों ने
स्वर्ग का स्वप्न

रत्नमण्डित
उच्च इन्द्रासन से
कुछ ही गज़ दूर
आसन पर बैठ
आँखें फाड़ी हैं
अधनग्न अप्सराओं
का देख
कैबरे नृत्य

एक हाथ में ले
आबे ज़मज़म का जाम
हम-आगोश हूर के
गुदाज़ बदन का
पढ़ा है भूगोल

सर पर लगा "हेलो"
हाथो मे "हाप"
उडते नभ बादलो पर
किया है विश्राम

मगर दिये हैं दु स्वप्न
उन्ही किताबा ने

रोजे महशर का
दिल दहलाता
ढोल

ताण्डव नत्य
प्रलय का

मुँह बाय कब्रे
पुनर्जीवित शव
गुनाहा का हिसाब

और जानलेवा आग
दोजख की

स्वप्नो पर विश्वास
करता मन का
शिशु

कि पीकर
दरिया मद्य का,
नही हागा

हैंग ओवर

मांसल हूर के
यजन से
नहीं थकेगी
जांघ

कीड़ों से
खाए गए जिस्म
खड़े हाग,
अस्तित्वहीन पांवों पर

नैन दहति पावक
आत्मा को
झुलसेगी
दोजख की आंच

जानता मन का
वयस्क
सपनों का सत्य

शरीर को थकाए बिना
नहीं देता आराम
बादल सरीखा
बिस्तर भी

मांगती रति क्रीडा
थोड़ा अतराल

सुनकर
हाप की टेऊँ टेऊ
अवश्य पकते
कान

स्वग-नरक का भय
क्या नही है 'गब्बर सिंह'

आज भी कोई जब
डरता है
झपकाता पलक
याद आता निमि
जो बना प्रतीक
स्वग के कोप का

शरीर से मोक्ष माग
क्या हुआ मुक्त
इक्ष्वाकु-पुत्र ?

तुम भी मुक्ति को
ऐसे देखत हो
मानो यह शरीर
एक पिंजडा है
जिससे छूट
भरोग उडान
आजाद पक्षी की तरह

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुक्ति नही है इसी वक्त
अपने आप स

मुक्ति है शब्दा से
फँसते हैं जिनके जाल म
नासमझ मछलिया की तरह

शब्द जो झूठे नही हैं
मगर इस्तेमाल से
घिस गए हैं
और खा बठे ह
अपन सही अथ

मुक्ति है मत्यु के
भय से

जो कभी पैदा नही हुआ
वह कभी मर सकता है
और जो रोज मरता है
उसके मरने पर क्या शोक

जब टी० वी० नही पकड पाता
दूरदशन के
ध्वनित दृश्य
हम बदल नही लेते

यदि डर नही है
ता वही है माक्ष

मुक्ति है किताबों से,
लिखे हुए जवाबों की स्याही
फैल जाती पुराने कागज़ात पर

लिखे जवाब उतरते पुस्तकों से
पंडितों पादरियों की जेब में

अगर हाथ उलझे हों किताबों से
तो कैसे होगा काम ?

हम में दम है तो फेंकें सभी किताबों को
पी नहीं पाएँगी फिर बच्चों का लहू
नहीं छाएंगे शहरों पर घनेरे बादल
नहीं ठिठकेंगी तरसते दिल की धड़कन
जब पड़ेंगी दरवाज़े पर पड़ोसी की दस्तक

मुक्ति नहीं सोती हुई बीवी
और राहुल को
देना त्याग,
हाथ में लेके कमण्डल
जंगल को प्रस्थान

मुक्ति है जीवन को जीना
मगर ताज़गी के साथ

मुक्ति है रिश्तों को समझना
एक नाज़ुक कच्चा धागा

मुक्ति है बदलना नज़रिए का

फिल्म के खलनायक को
बलात्कार करते देख
रुकती नही बच्चे की रुलाई
समझत माँ-बाप
छाया-आकृतियो का
मसनवी ससार

मुक्ति है फेंक देना
पूर्वाग्रहो की ऐनक
मुक्ति मोतियाबिंद की
शल्य चिकित्सा है

देखा नही बिस्तर पर
तडपते शरीर को
सपने के डर से

मुक्ति स्वप्न से
जाग जाना है

सोचते तुम
वह वहाँ है
मैं यहा हूँ
तडफडाते उस तक
क्याकर पहुँचू

मुक्ति है यह ज्ञान
तू उपकरण है
वह बिजली का प्रवाह

यह विश्वास
कि इसी मे है उसकी सार्थकता
वह तुम्हारे बीच से आकर बहे

डेढ़ सौ साल पहले
नाचा था नीत्शे
ईश्वर मर गया !!!

ईश्वर था ही कब
जो वह मरता

अगर थी बात
मनुष्य के दिमाग में
ईश्वर के ख्याल की
तो वह कहाँ मरी

यदि वह होता तो
क्यों बनता विधान
बीजन को अण्ड
किए जाए जाया
लाखों शुक्राणु

गिराने को
पजमुर्दा पत्ते
उठाए जाएँ
तूफान

बद्री केदार
जा रहे भक्त
लुढकाए जाए
अलकनदा म

करने को तैयार
आज का आदमी
किए जाएँ प्रयोग
बदशक्ल बदरो के

मर गया होता
जो उसका ख्याल
न आते अमरीकी
स्वामियो कि शरण

नही काटता भाई
ज्वालाजी मे
अनुज का सर

वैज्ञानिका की भीड
उमडती नही
तात्रिको के द्वार

न करते राज
मुस्लिम देशो म
मौलवी मुल्ला

यदि वह नही है
क्या उसका ख्याल

एरभरत यह है भी
और नहीं भी
जगत नहीं है कारखाना,
यह नहीं प्रबंधक

जगत नहीं है
साम्राज्य
यह नहीं
राजा

जगत नहीं है
चमचा-चंठक
यह नहीं
हुक्का गुड़गुड़ाता
जमींदार

जगत नहीं है
परिवार
यह नहीं है
पिता, माता
बंधु सखा

अरबों साल पहले
मजाक की मजाक में
उसने की ईजाद
विश्व की मशीन
दबाना बिंदु-बटन
था अंतिम कृत्य
फिर नहीं देखा

किसी ने उसको,
पिस गया महीन

जर्रा जर्रा बिखर गया
कायनात मे
जसे कभी न था
उसका वजूद

फूल पखुडी पखुडी
गिर जाता है
देर तक रची रहती
उसकी महक,
साल दर साल
बसी रहती याद
दर्खे मखमूर अदा की
एक झलक

तभी तो प्रत्येक
अश ने
की है 'फुल' की
तलाश

किसी न ढूढा
सुनहरी हसीना के
हर खूबसूरत
कटाव मे

गाली आँखों में
सागर सा फूटता
बहुमी मिलन

होठों की
पाखनी को
खामोश पीते
हाठ

सांसों की स्पर्श की
हर सीत्कार

गोश्त के
गोल गर्म सुख

नीवीबन्ध की
रस्मी इन्कार करती
रेशमी गाँठें

बदन से बदन के
मिलने की छपाक

चरमबिंदु का
कालरोक क्षण

ढूंढा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी

□

किसी ने तलाशा
सुनहरी मोहरो की
हर खूबसूरत
चनक मे

गुप्त गोदामा की
गुमनाम गिरफ्त मे
भूखे लोगा से दूर
सडता अनाज

गिरवी ग़रीबो के
घिघियाते
कज़ माँगते हाथ

मजदूर यूनियन के
गरजते नताओ की
हड्डियाँ चूरती
दोस्त-पुलिस की
मस्ताना लाठियाँ

सौगुने फायदे को
सहज दिलाती
जन्मसिद्ध अधिकार-सी
गर्मी माँगती
सरकारी मुट्ठियाँ

ढूढा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी

□

किसी न खोजा
कट सुनहरे सरो के
ज़मीन पर लुढ़कने की
हर खूबसूरत
धनक मे

निकालकर खड्ग
निर्दोष शहरियो का
कत्ले-आम

भागती औरतो को
केश से पकड़
खुरदुरे खेतो मे बिछा
सामूहिक बलात्कार

सुनकर जयजयकार
गज़ भर लबे हो
कीडो-सी भीड पर
एक मगरूर दृष्टिपात

खोजा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी

कोई अन्वेषण है
सुनहरे लफ्ज़ो का

सगतराश,
सुनहरे रगा का
कलमकार

उसका 'कुल' है
नगे पतझड के
काले पड का
नाजुक सिलहट

बूढे हब्शी की
माथे की झुर्रियो पर
काँपती रोशनी का
अदभुत खेल

पपीहे की
निरथक रट से
छानकर रचाई गई
बाँसुरी की धुन

जिदगी की
हर छोटी हरकत से
ले गुलाबी अक
नाची गई थिरकन

घटनाओ के
तूफानी थपेडा से
सालिम उभरती
चरित्रो की चटटाने

बेहूदी बकवास से
परखा
छाटा गया
एक मैनीखेज
जुम्ला

अर्थों को
पत दर पत
खोलत
कल्पना के
शिखर चमकात
बिम्ब

किया अन्वषण
उसी 'कुन' का
और शायद पाया भी

एक तलाश और भी
बेमानी से जीवन के
मुसलसल गुजरे में
सुनहरे ख्याला की
तवायफी छनक

विरोधाभास क

अँधेरे जगल मे
विचार की पगडडी पर
चलने की ललक

परिभाषा के
पतले
रेशमी धागे से
अथ के पागल साँड को
बाँधने का जतन

तक की
हिलती झूलती
रस्सी से
'नियागरा को
पारने का
प्रयत्न

रहस्य के
पिघलते पारे को
चिकनी हथेली से
पकडने का प्रयास

दशन के
नारी
पौधा मे
अज्ञात के नामकरण
की उद्दड
कोशिश

समय के बदलते
रंगों से
मेल खाने की होड़ में
हाँफते
सत्य के गिरगिट ने

ढूंढा है उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी है

तुम भी भागे हो
पूरण के पीछे
जैसे
इला के पीछे
इक्ष्वाकु

कभी पकड़ी
साकार इला
कभी निराकार
सुद्युम्न
और कभी किंपुरुष
जो साकार है
और निराकार भी

और जब कुछ नहीं समझे

तो दौड़े
सतो के चरणो म

सता के काना ने
किया अनथक यत्न
उस
सुनहरे सूरज के
अश्वचापो की
अश्रव्य धमक सुनने का

सुनसान मरुस्थल की
अधाती लू म
मिला किसी को
पाक पैगाम

'कोहेतूर' की
जलती हुई झाडी मे
पाया किसी ने
निषेधात्मक स्वर

सजीव की पीडा को लाघ
गद्दारी स बेपरवाह
किसी ने की बात
क्षमाशील पिता से

ढूढा सभी सतो ने
उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी

सोचा तुमने
उलझाव से बचाव
इसी म है
विवेक और सयम की सलाइया पर
बुनो जिदगी को

फिर कह दिया
किसी ने
बुनते क्या डिजाइन
हो चुका नाप-सोच,
अकित वीडियोटेप पर
हर छीक
हर अँगडाई का
चित्र

और तुमने
मान लिया

मगर जरा सोचो
बदा है सब कुछ
तो बदी नेकी,

कुरुक्षेत्र के
खूंखार मैदान मे
निष्काम कर्म का
किया किसी ने आह्वान

बोधिवृक्ष की
निश्छल छाँव तले
बूझ गया कोई
मध्य मार्ग का
अनुपम रहस्य

दु ख की चक्की मे
पिसकर ही बनी
अह के गदुम से
विवेक की रोटी

घिसा
सघर्ष के सिलबट्टे पर
विवेक
तो ही उभरा
समत्व तिलक

हर गुजरते पल के
चकमक से टकराकर
पैनी हुई धार
चतन्य चाकू की

ढूढा सभी सतो ने
उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी

सोचा तुमने
उतलाव से बचाव
इसी म है
विवक और सयम की सलाइयो पर
बुनो जिदगी को

फिर कह दिया
किसी ने
बुनते क्या डिजाइन
हो चुका नाप-सोच,
अकित वीडियोटेप पर
हर छीक
हर अँगडाई का
चित्र

और तुमने
मान लिया

मगर जरा सोचा
बदा है सब कुछ
तो बदी नेकी,

बदी भी बदी
फिर बेमतलब है
कुछ करना, न करना
क्या सारा मजा
इसी बात मे नही है
कि कुछ नही है तय

हर बढता कदम
बनाता अपना ही माग
हर पग पर एक चौरस्ता

क्या हस्तरेखा नही
हाथ की सिलवट
और
मस्तक की लकीर
त्योरी का चिह्न

क्या भाग्य नही
तुम्हारे हाथो मे
पकडे हुए कलम
कमचे
कस्से
कूची म

क्या भाग्य नही
तुम्हारे पैरो से बँधा
कभी खुलता
कभी बँधता

तुम मे खेलता हुआ 'पूण'
क्या नही है रसिया
ऊबड पगडडियो पर
बाउल की तरह
डोलता नाचता

क्या लीक से
हटने का
नही चाहिए
तुम्हीं मे दम

उठता सवाल
कि जाएँ कहाँ
लीक की बेधास
बिला काटा
सुरक्षा छोड !

यह चिंता नई नही
जब भी छोडी लीक
लगा है डर
अनागत के रीछ
अप्रत्याशित के शेर
अनिष्ट के भेडिए का

सवाल उठता यह भी
कि लीक
छोडी ही क्या जाए
कहाँ से होकर जाती
नाले पारती

नदियाँ टापती
कही तो पहुँचाती

सच है यह सब
मगर पुराना
अब यह लीके
कही नही जाती

ज्ञान की लीक पर
देखो चलकर
मिलती, बिछुडती
लौट लौट आती
गोलाकार घूमती
सैकडो पगडडियाँ
भूल भुलैया म
झोकती आयु पयन्त

टोने से तुम
बन जाते गिद्ध
उडते ऊपर
आसमान मे
देखती नजर
दरिया तैरती
मछलिया का मास

योग की लीक पर
देखो चलकर
गडडे तत्र क्रिया के
जिनकी राख मे

फुफकारते
सिद्धि-सप
सर चकराती
ऊँचाइयाँ
घूमते जहाँ
बेवजह हँसते
हरहराते पागल

सुबह तीन बजे
जगे हुए
नाक अँगुलियो मे
पकडे हुए
शाकाहारी
लोग ब्रह्मचारी
जिन्हें कुछ नही हुआ

भक्ति की लीक पर
देखो चलकर
दलदल
अतिरजित
भावविह्वलता का

इधर नाचते
गाते हँसते
अश्रु बहाते
निपट नाकारे
पोगा पडित

आता मर
मूर्तिपूजा का
अधविश्वास की
उडती रेत
कर देती बद
ज्ञानचक्षु

खडे है राह मे
सब पथिको को
नक भय की
बदूक से धमकाते
डाकाजनी करते
ढागी पडित

कम की लीक पर
चलो अगर तुम
थोडा आगे
भाग्यवाद का
अधियारा वन

बठी ठाली
गप्प लगाती
इतिहार म
स्वयप्रकाश की
अकमण्यता

दूजे पीते
दारू अतिकम की
दौड हाँफकर

तप करते
आत्म विस्मरण का

है बहुत सुगम
हो जाना पथभ्रष्ट
क्योंकि
रास्ता के नाम
वही हैं
मगर
रास्ते बदल गए हैं

था कृष्ण का जीवन
जिंदा
रस से सराबोर

वह गाँव के खालिस
मक्खन का शैदाई
जल जीवों का
शिकारी
मारता था भीमकाय राक्षस
दे कराटे हाथ

हेमलिन के पाईड पाइपर सा'
बाँसुरी की धुन से
भोली गोपियों को

सब्जबागो मे बुला
खेलता यौवन से
मारी सारी रात

नही थी युधिष्ठिर की
आदश के आडम्बर मे
लिपटी अकमण्यता
कौरवा के हथकडा का जवाब
न ही अजुन की
विरचित की भाषा म उलझी
कायरता,
उसका उत्तर था
यथाथ की
मजबूत जमीन पर खडा
कृष्ण का कमयोग

कहा था जो कृष्ण ने
क्या वही लिखा है गीता मे
कहाँ है कम पर उसकी
जीवत मीमासा
क्या यह नही सच
कि कृष्ण के कहे को
गाड दिया गया
गहरा
ताकि जी न सके कोई

योग की अति से विरक्त सिद्धाथ
भागा जगल म,

हुआ तप से परेशान
सुदरी के हाथ से बनी
मीठी खीर को खा
बना बुद्ध

कहा उसने
ढीले न छोडो तार
न कसो ज्यादा
रखो वह मध्यमार्गी कसाव
जहाँ जीवन से उभरता है
मधुर सगीत

उसने कभी कहा
कि भिक्षु है आदर्श
पूरे समाज का
क्या भिक्षु का जीवन
है मध्यमाग ?

अगर भूला नही रस्ता
तो विवस्वान

आज भी निकलती
उसके अतर से
स्वत स्फूत ऊर्जा

किसी से नहीं मांगनी पड़ती
भीख

ज्ञान के चिरंतन यज्ञ में
दंभ अहं की आहुति
पर्याप्त ऊष्मा
सर्वव्यापी करुणा की,
समभाव का प्रकाश

उसका धर्म
आरोपित नहीं
बहता उसके स्वभाव से
पहाड़ के दिल से
फूटते
चश्मे सा

सही रास्ते पर चला था
इक्ष्वाकु भी

वह सौ पुत्रों का जनक
नहीं हुआ
भोग से विमुख

क्रोध की जरूरत पर
बिना अपराध भाव
किया निष्कासित
विकुक्षि

उसे नहीं था भ्रम
कि
सूर्यवंश का संस्थापक
नहीं पा सकता
मोक्ष !

आज नहीं फुर्सत
आदमी को
चढ़ने की
फलसफे के फिसलते
मल्लखम्भ पर

अँधेरे बदबूदार
कमरों की सड़ाँध का वासी
महँगाई की
अजगरी पकड़ से बदहवास
बीवी की कर्कश सच्चाई का
भोक्ता

गगनचुम्बी इमारतों की
साठवीं मंजिल से
चारों तरफ फैली
साठवीं मंजिलों का द्रष्टा
बास की जोरदार
दुलत्ती का आदी

भीड की रेलपेल म
घिच्चपिच्च हुए
आदमी के पास
यहाँ बची है शक्ति
कि वह पूछे
प्रश्न
सृष्टि के, सष्टा क
या ढूढे
जिदगी का मक़सद

क्या उसके लिए
काफी नही है
कुछ सादा बातें,
जिन्हे वह परखे
आजमाए
और ठीक पान पर
बन जाए

जैसे यह
कि जिदगी नही मौत की तयारी
जिदगी अपने आप मे मैनीखेज

मोक्ष जीवन से नही छुटकारा
मोक्ष है रिहाई स्वनिर्मित कद से

इस बात म नही कोई शम
कि जिदगी दे मजा
हर किस्म का
समस्या है केवल तब

जो जिएँ हम
सिर्फ मज़े की खातिर

चैतन्य माँगता है
हर लम्हा
हर पल
नई नज़र
नया दृष्टिकोण
जीना चाहता
हर बदलते रिश्ते को
एक अल्हड़
ताज़गी के साथ

तो जीवन को लें
बस जीने की प्रक्रिया
जिएँ उस गाम्भीर्य से
कि हो जाए मज़ाक की इन्तिहा

उगने दें अंदर
निर्विचार का वृक्ष
और खाएँ कभी कभार
उसका भी फल
मगर
आठों पहर न बैठें
नासिका पकड़

जीवन को जानें
एक नाटक
जिसका स्क्रिप्ट

लिए रहे हमी
और सफलता का जोड़ें
किरदार की अदायगी के साथ

छोके वैवस्वत मनु
हवा के प्रवाह में
पैदा हुआ
इक्ष्वाकु

अपने जन्म के बारे में
यह गाथा
इक्ष्वाकु ने
गढ़ी थी स्वयं

नहीं देखा जाता
कथा का
शाब्दिक सत्य

मनुष्य सब समझता है
कि उसका जन्म
एक अतिथि
अकारण, अकस्मात
छोक-सा है
तभी करता शुरुआत
रहस्य के गर्भ में पहुँचने की

बूझना चाहते हो
तो पूछो
अपने मन मे विराजमान
इक्ष्वाकु से।

□□

दिशा प्रकाशन

आपका अपना प्रकाशन है

दिशा परिवार

मे

लेखक/पाठक/समालोचक

सभी का स्वागत है।

साहित्य : राष्ट्र निर्माण का आधार